श्री रवि स्तुतिः (त्रिदेव कृतं)

श्री रवि स्तुतिः (त्रिदेव कृतं)

दृष्ट्वैवं देवदेवस्य रूपं भानोर्महात्मनः |
विस्मयोत्फुल्लनयनास्तुष्टवुस्ते दिवाकरं || 1 ||

कृतांजलिपुटो भूत्वा ब्रह्मा स्तोतुं प्रचक्रमे |
प्रणम्य शिरसा भानुमिदं वचनमब्रवीत् || 2 ||

ब्रह्मोवाच |
नमस्ते देवदेवेश सहस्रकिरणोज्ज्वल |
लोकदीप नमस्तेऽस्तु नमस्ते कोणवल्लभ || 3 ||

भास्कराय नमो नित्यं खषोल्काय नमो नमः |
विष्णवे कालचक्राय सोमायामिततेजसे || 4 ||

नमस्ते पंचकालाय इंद्राय वसुरेतसे |
खगाय लोकनाथाय एकचक्ररथाय च || 5 ||

जगद्धिताय देवाय शिवायामिततेजसे |
तमोघ्नाय सुरूपाय तेजसां निधये नमः || 6 ||

अर्थाय कामरूपाय धर्मायामिततेजसे |
मोक्षाय मोक्षरूपाय सूर्याय च नमो नमः || 7 ||

क्रोधलोभविहीनाय लोकानां स्थितिहेतवे |
शुभाय शुभरूपाय शुभदाय शुभात्मने || 8 ||

शांताय शांतरूपाय शांतयेऽस्मासु वै नमः |
नमस्ते ब्रह्मरूपाय ब्राह्मणाय नमो नमः || 9 ||

ब्रह्मदेवाय ब्रह्मरूपाय ब्रह्मणे परमात्मने |
ब्रह्मणे च प्रसादं वै कुरु देव जगत्पते || 10 ||

एवं स्तुत्वा रविं ब्रह्मा श्रद्धया परया विभो |
तूष्णीमासीन्महाभाग प्रहृष्टेनांतरात्मना || 11 ||

ब्रह्मणोऽनंतरं रुद्रः स्तोत्रं चक्रे विभावसोः |
त्रिपुरारिर्महातेजाः प्रणम्य शिरसा रविं || 12 ||

महादेव उवाच |
जय भाव जयाजेय जय हंस दिवाकर |
जय शंभो महाबाहो खग गोचर भूधर || 13 ||

जय लोकप्रदीपेन जय भानो जगत्पते |
जय काल जयाऽनंत संवत्सर शुभानन || 14 ||

जय देवाऽदितेः पुत्र कश्यपानंदवर्धन |
तमोघ्न जय सप्तेश जय सप्ताश्ववाहन || 15 ||

ग्रहेश जय कांतीश जय कालेश शंकर |
अर्थकामेश धर्मेश जय मोक्षेश शर्मद || 16 ||

जय वेदांगरूपाय ग्रहरूपाय वै गतः |
सत्याय सत्यरूपाय सुरूपाय शुभाय च || 17 ||

क्रोधलोभविनाशाय कामनाशाय वै जय |
कल्माषपक्षिरूपाय यतिरूपाय शंभवे || 18 ||

विश्वाय विश्वरूपाय विश्वकर्माय वै जय |
जयोंकार वषट्कार स्वाहाकार स्वधाय च || 19 ||

जयाश्वमेधरूपाय चाग्निरूपार्यमाय च |
संसारार्णवपीताय मोक्षद्वारप्रदाय च || 20 ||

संसारार्णवमग्नस्य मम देव जगत्पते |
हस्तावलंबनो देव भव त्वं गोपतेऽद्भुत || 21 ||

ईशोऽप्येवमहीनांगं स्तुत्वा भानुं प्रयत्नतः |
विरराज महाराज प्रणम्य शिरसा रविं || 22 ||

अथ विष्णुर्महातेजाः कृतांजलिपुटो रविं |
उवाच राजशार्दूल भक्त्या श्रद्धासमन्वितः || 23 ||

विष्णुरुवाच |
नमामि देवदेवेशं भूतभावनमव्ययं |
दिवाकरं रविं भानुं मार्तंडं भास्करं भगं || 24 ||

इंद्रं विष्णुं हरिं हंसमर्कं लोकगुरुं विभुं |
त्रिनेत्रं त्र्यक्षरं त्र्यंगं त्रिमूर्तिं त्रिगतिं शुभं || 25 ||

षण्मुखाय नमो नित्यं त्रिनेत्राय नमो नमः |
चतुर्विंशतिपादाय नमो द्वादशपाणिने || 26 ||

नमस्ते भूतपतये लोकानां पतये नमः |
देवानां पतये नित्यं वर्णानां पतये नमः || 27 ||

त्वं ब्रह्मा त्वं जगन्नाथो रुद्रस्त्वं च प्रजापतिः |
त्वं सोमस्त्वं तथादित्यस्त्वमोंकारक एव हि || 28 ||

बृहस्पतिर्बुधस्त्वं हि त्वं शुक्रस्त्वं विभावसुः |
यमस्त्वं वरुणस्त्वं हि नमस्ते कश्यपात्मज || 29 ||

त्वया ततमिदं सर्वं जगत् स्थावरजंगमं |
त्वत्त एव समुत्पन्नं सदेवासुरमानुषं || 30 ||

ब्रह्मा चाहं च रुद्रश्च समुत्पन्ना जगत्पते |
कल्पादौ तु पुरा देव स्थितये जगतोऽनघ || 31 ||

नमस्ते वेदरूपाय अह्नरूपाय वै नमः |
नमस्ते ज्ञानरूपाय यज्ञाय च नमो नमः || 32 ||

प्रसीदास्मासु देवेश भूतेश किरणोज्ज्वल |
संसारार्णवमग्नानां प्रसादं कुरु गोपते |
वेदांताय नमो नित्यं नमो यज्ञकलाय च || 33 ||

इति श्रीभविष्ये महापुराणे ब्राह्मेपर्वणि त्रिपंचाशदुत्तरशततमोऽध्याये त्रिदेवकृत श्री रवि स्तुतिः |